'भारत का स्वर्णिम भविष्य ' महोत्सव का आगाज

नई दिल्ली। न्यायमूर्ति जी.एस. सिंघवी ने नेताजी सुभाष प्लेस मैदान में ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा महाशिवरात्रि पर्व पर मनाये जा रहे भारत का स्वर्णिम भविष्य महोत्सव का उद्घाटन करने के पश्चात कहा कि यह केवल एक मेले का उद्घाटन मात्र नहीं बल्कि संस्था एक क्रान्ति का सूत्रपात कर रही है। उद्घाटन सत्र ''हिंसा मुक्त समाज'' में उन्होंने विषयांतर्गत कहा कि हिंसा का सबसे बड़ा कारण है परिग्रह अर्थात् लोभ वृत्ति। परिग्रह का कारण मानव की भौतिक इच्छायें हैं। इसलिये जितने भी लोग परिग्रह से धन इकट्ठा करते हैं वहाँ हिंसा उत्पन्न होती है जो कि छोटे दिमाग की उपज है।

ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने माउण्ट आबू से विडियो कान्फ्रेंसिग के द्वारा इस शुभ अवसर पर कहा कि ये मेले का विषय ''समय की पुकार-हिंसा मुक्त समाज'' है। अर्थात् लोगों को व समाज को हिंसा मुक्त करने के लिये इस मेले में आध्यात्मिक ज्ञान एवं सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा आन्तरिक सशक्तिकरण की उपाय एवं अनुभूति करायी जायेगी जो कि महाकुम्भ सदृश्य पापनाशक साबित होगा।

ब्रह्माकुमारी संस्था के दिल्ली क्षेत्रीय सह मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रूक्मणि जी ने इस अवसर पर अपने आर्शीवचन दिये कि स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन समय की पुकार है। अब हमें ज्ञान नेत्र को खोलना होगा जिससे हम स्वयं को तथा स्वयं के गुणों एवं शक्तियों की प्रयोग कर ये दुखमय दुनिया बदल कर सुखमय संसार बनाना होगा। यही परमात्मा की तथा समय की पुकार है।

संयुक्त राष्ट्र सूचना केन्द्र भारत एवं भूटान की निदेशिका श्रीमति किरण मेहरा ने कहा कि शान्ति और अहिंसा ये दो मूल्य यू.एन. के मुख्य लक्ष्य है और यही ब्रह्माकुमारी संस्था का लक्ष्य होने के कारण उन्हें हमसे जोड़ता हैं। हमने समाज को सुधारने के जो भी कदम उठाये उससे हिंसा खत्म होनी चाहिए। उन्होंने कहा की भेदभाव और गरीबी भी हिंसा के रूप हैं। जहां धर्म, रंग और भाषा का भेदभाव होता वहाँ सम्पन्नता नहीं आ सकती। सहनशीलता, धीरज, विनम्रता आदि मूल्य

नौ दिवसीय महोत्सव में लगाये गये विभिन्न स्टॉलों को देखने उमड़ा जनसैलाब

बहुत महत्वपूर्ण हैं ये स्कूलों की पढाई में उतना ही जरूरी है जैसे स्कूल के अन्य विषय एवं खेलकूद।

अन्तर्राष्ट्रीय ब्रह्म विद्यापीठ, त्रिनिदाद के स्वामी ब्रह्मदेव महाराज ने अहिंसा मुक्त समाज के लिए लोगों से आह्वान करते हुए कहा कि आप एक-एक दिया हो जो समाज को अन्धकार से निकाल रोशनी की ओर ले जायगा। आध्यात्मिक ज्ञान, साहस और शक्ति के आधार पर ही अपने को एवं समाज को हिंसा मुक्त कर सकते हैं।

फिल्म और टेलीविजन एशियन एकेडमी के चेयरमेन डॉ सन्दीप मारवाह ने कहा कि यह धरा जो कि हमारे बुरे आचरण से नर्क समान बन गई है उसे स्वर्ग समान बनाना हमारी जिम्मेवारी है। अपने सकारात्मक सोच एवं श्रेष्ठ कर्म के द्वारा ही इस जिम्मेवारी को हम पूरा कर सकते हैं।

संस्था के मुख्य प्रवक्ता ब्र.कु. ब्रजमोहन ने कहा कि किसी भी प्रकार की नकारात्मक गतिविधि हिंसा है। प्रत्येक व्यक्ति मायूस है या मजबूर है जिससे समाज में निराशा, भय और हिंसा उत्पन्न हो रही है। उन्होंने मेले में लगाये गये विभिन्न पण्डालों, झाँकियों जैसे अहिंसा परमोधर्मः, धर्म ग्लानि के चिन्ह, आज के कुम्भकरण को जगाना, गंगा और हरिद्वार, पतित पावनी कौन? रावण अभी मरा नहीं है, गीता का भगवान कौन?, फैमिली काउन्सलिंग एवं व्यसन मुक्ति का चित्रण करते हुए उसका उद्देश्य स्पष्ट किया।

अमेरिका में ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्रों की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी ने कहा भारत के पास चरित्रता का धन है। सुख व शान्ति के लिए दो बातें आवश्यक हैं – मनुष्य का विचार और आपस के सम्बन्धों में मधुरता। आने वाली दुनिया में ये दोनों बातें श्रेष्ठ होगी जिससे वहाँ सम्बन्धों में मधुरता होगी।

सी.बी.आई. के भूतपूर्व निदेशक डी.आर. कार्तिकेयन ने कहा कि इस संस्था ने शान्ति का सन्देश फैलाया है, जिसको अपनाने से परिवार, समाज वे देश बेहतर बनेगा। इस अवसर पर दिल्ली एवं चण्ड़ीगढ़ के चुनाव आयुक्त राकेश मेहता, ओमशान्ति रिट्रीट सेन्टर, गुडगांव की निदेशिका ब्र.कु. आशा ने भी सभा को सम्बोधित किया।

धर्म समाज को शांति का पाठ पढ़ाते आए हैं

देहरादून। सर्व धर्म चाहे वह हिन्दु धर्म हो, मुस्लिम धर्म हो या कोई और धर्म, सभी ने समाज को शांति का पाठ पढ़ाया है। किसी भी धर्म स्थापक ने यह नहीं कहा कि यह ज्ञान केवल एक धर्म वालों के लिए है बल्कि सभी मनुष्य मात्र के लिए है।

उक्त विचार उत्तराखण्ड के राज्यपाल डॉ.अजीज कुरैशी ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा आयोजित सर्व धर्म सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होने कहा कि वर्तमान समय में मनुष्य अज्ञान वश धर्म के नाम पर दंगे व लड़ाई कर रहा है। धर्म के नाम पर आपस में नफरत की खाई पैदा की जा रही है। सच्चा धर्म वही है जो गरीब असहाय लोगों की सहायता करे। आवश्यकता इस बात की है कि हम सब आपस में एक साथ बैठकर इस समस्या का हल निकालें। ब्रह्माकुमारी संस्था के प्रयास से समाज को एक नई दिशा मिलेगी।

ब्रह्माकुमारीज धार्मिक प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु.प्रेमलता ने कहा कि आज धर्म को मानने वाला मनुष्य धार्मिक शिक्षाओं को आचरण में नहीं ला रहा। अगर सभी मनुष्य धर्म के अर्थ को जान जायेंगे तो न कोई अपने को हिन्दु समझेगा और न कोई मुसलमान। हम सभी इस देह से ऊपर एक आध्यात्मिक शक्ति आत्मा हैं। हम सभी आत्माओं का स्वधर्म है शांति। जब तक स्वयं को देह समझेंगे तब तक गुणवान नहीं बन सकते। मैं आत्मा हूँ, अगर यह पक्का हो जाए तो हमें कोई दुख नहीं होगा। आत्मा का सब कुछ वह एक ईश्वर है। यह संसार भी एक खेल है ना साथ कुछ लाए थे और ना ही साथ कुछ जायेगा। धर्म मनुष्य को श्रेष्ठ बनना सिखाता है। धर्म शब्द का अर्थ ही धारणा है। धारणा ही मनुष्य को श्रेष्ठ बना सकती है। राजयोग मेडिटेशन दिव्य जीवन बनाने की एक कला है।

उत्तराखण्ड के राज्यपाल डॉ.अजीज कुरैशी, ब्र.कु.प्रेमलता तथा संतवृंद सर्व धर्म सम्मेलन में।

जे.वी.ग्रीन ने कहा कि जब तक भाई अपने भाई से प्रेम नहीं करता, पड़ोसी अपने पड़ोसी से प्रेम नहीं करता तो उस ईश्वर जिसे उसने देखा नहीं है उससे प्रेम कैसे कर सकता है? मनुष्य शांति के लिए मंदिर -शेष पेज 8 पर

भारत - वार्षिक 170 रुपये
तीन वर्ष 510 रुपये
आजीवन 4000 रुपये
विदेश - 2000 रूपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट माउण्ट आबू) द्वारा भेजें ।

ओम शान्ति मीडिया
सम्पादक : ब्र.कु.गंगाधर
ब्रह्माकुमारीज, शांतिवन, तलहटी
पोस्ट बॉक्स नं. - 5, आबू रोड (राज.) 307510
Enquiry For Membership, Mob. No. - 09414006096
(M)- 9414154344, E-mail : mediabkm@gmail.com,
omshantimedia@bkivv.org, webside:www.omshantimedia.info

प्रति

RNI NO RAJHN/2000/721, NEWS PAPER TO POST CONCSSIONAL REGISTRATION NO. RJ/SIROHI/9623/12-14, 12TH TO 14 TH, 22 ND TO 24TH POSTED TO SHANTIVAN POST OFFICE
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, सलाहाकार संपादक: कमल दीक्षित, प्रकाशक: ब्र.कु.करूणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज् मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ.) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट साल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।